एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 03 (मार्च, 2026)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

बिहार राज्य के परिप्रेक्ष्य में नकदी सब्जी फसल परवल (पटल) की खेती का अर्थशास्त्र: एक अध्ययन

*अमलेन्दु कुमार[1] एवं परांजल कनौजिया[2]
[1]सहायक प्राध्यापक, कृषि अर्थशास्त्र विभाग, ति. कृ. महा., ढ़ोली (डॉ. रा. प्र. के. कृ. वि., पूसा), भारत
[2]एमएससी, पुष्प कृषि और भूदृश्य निर्माण, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: amlendu99@gmail.com

विश्व में परवल की खेती भारत के अलावा चीन, रूस, पाकिस्तान, नेपाल आदि देशों में की जाती है। भारत में इसकी खेती मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल में करीब 50 प्रतिशत, बिहार में लगभग 13.5 प्रतिशत एवं उत्तर प्रदेश में 9.6 प्रतिशत कुल अच्छादित परवल के रकवा में हिस्सेदारी है। इसलिये भारत में उपर्युक्त राज्यों का परवल की खेती में क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त है। बिहार परवल उत्पादन में देश का एक अग्रणी राज्य है जहाँ किसान इसकी खेती मुख्य रूप से गर्मी के मौसम में बड़े स्तर पर करते है। इस फसल की माँग शादी, पार्टी, अनुष्ठान के साथ साथ मिठाई एवं आचार उद्योग में बड़े स्तर पर होता रहा है। चूँकि परवल एक पौष्टिक एवं स्वास्थयवर्धक सब्जी है जिसमें विटामिन, प्रोटिन व कार्बोहाइड्रेट प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता है इसलिये ग्राहको में बहुत लोकप्रिय है। इस फसल के उत्पादन से किसानों को अच्छी लाभ की प्राप्ति होती है इसलिये यह आर्थिक दृष्टिकोण से भी उत्तम है। परवल की सबसे खास विशेषता यह है कि यह अन्य सब्जियों की तरह जल्दि खराब नही होता है एवं तुड़ाई के कई दिनों तक इसे भंडारण कर सुरक्षित रखा जा सकता है। बिहार राज्य में परवल की खेती मैदानी क्षेत्रों के साथ साथ दियारा क्षेत्रों में भी बड़े पैमाने पर की जाती है। दियारा क्षेत्र जो बिहार के बक्सर जिला से फैलकर भागलपुर जिला होते हुये राजमहल तक गंगा नदी के किनारे फैला है इसके दोनो किनारों पर परवल की खेती प्रचुर मात्रा में होती है। इसके अलावा अन्य नदियों जैसे गंडक एवं बुढ़ी गंडक नदियों आदि के किनारे भी किसान सफलतापूर्वक इसकी खेती करते हैं।

अर्थशास्त्र

परवल की खेती का अनुमानित आय–व्यय का ब्योरा किसानों के साथ साक्षात्कार कर अलग अलग मैदानी तथा दियारा एवं ढ़ाब क्षेत्रों में उत्पादन के अर्थशास्त्र का आँकलन किया गया है। किसानों के साथ साक्षात्कार के दौरान यह ज्ञात हुआ कि परवल की खेती के लिये प्रति हेक्टेयर सामान्य भूमि में जुताई, पाटा, गड्ढ़ा, लत्तर, खाद, उर्वरक, रासायनिक दवायें, मचान एवं चौकीदारी हेतु व्यय किया जाता है। जबकि दियारा क्षेत्र में सिर्फ गड्ढ़ा, लत्तर, खाद, उर्वरक, रासायनिक दावायें एवं चौकीदारी पर व्यय होता है। सामान्यतः जुताई एवं पाटा करने के बाद मैदानी इलाको में किसान 05 फीट के अंतराल पर क्रमशः 01 फीट लंबा, 01 फीट चौड़ा एवं 01 फीट गहरे (01' × 01' × 01') आकार का 5000 गड्ढ़ा खोदकर कम से कम दो दिनों तक मिट्टी सुखाकर उसमें खाद, उर्वरक एवं दवाओं का मिश्रण मिट्टी में मिलाकर खोदे गये गड्ढ़े में भर देते है। इसके बाद परवल के प्रभेदो जैसे डंडाली, राजेन्द्र परवल–1, स्वर्ण रेखा, सफेदा, गुथलिया इत्यादि प्रचलित प्रभेदो में से किसी एक का चयन कर उसकी लत्ती 05 फीट प्रति गड्ढ़ा के हिसाब से एक हेक्टेयर के लिये 5000 गड्ढ़ो में रोपने हेतु कुल 25000 फीट लंबा लत्तर का उपयोग करते हैं। इसमें ध्यान रखने योग्य बात यह है कि लत्तर का उम्र कम से कम तीन से चार माह का होना चाहिये। प्रत्येक 05 फीट काटे गये लत्ती जो एक गड्ढ़े के लिये उपयुक्त है उसकी लंबाई को लपेटकर 01 फीट लंबा बनाकर गड्ढ़े में रोपाई कर देते है। एक निश्चित मात्रा में गोबर खाद खल्ली एवं रासायनिक उर्वरकों के साथ दवाओं का उपयोग करना आवश्यक होता है। इस फसल को नवम्बर से दिसम्बर माह तक रोपना आवश्यक होता है। रोपाई के बाद फरवरी माह में प्रति थल्ला रासायनिक उर्वरकों का व्यवहार अनिवार्य रूप से करते रहना चाहिये। दियारा क्षेत्रों में/नदी किनारे वाले भूमि पर सिंचाई नही होती है जबकि अन्य क्षेत्रों में अप्रैल से मई माह के दौरान दो बार हल्की सिंचाई आवश्यक होती है। नीचें दी गई सारणी में परवल की खेती का अनुमानित अर्थशास्त्र अलग अलग भूमि के अनुसार प्रस्तुत किया जा रहा है:–

1. मैदानी क्षेत्रों के लिये

सारणी 01: मैदानी क्षेत्रों में परवल की खेती प्रति हेक्टेयर अनुमानित व्यय का ब्योरा

विवरण	उपयोग की जानेवाली सामाग्री	दर (रू0)	लागत खर्च (रू0)
जुताई का खर्च	हल से तीन जुताई (15 हल)	300.00	4500.00

गड्ढ़ा कोराई खर्च	20 मजदूर	250.00	5000.00
लत्ती खरीदकार ढुलाई का खर्च	1560 बोझा	5.00	7800.00
लत्ती लगाने का खर्च	20 मजदूर	250.00	5000.00
खाद/उर्वरक/दवा में खर्च			
सड़ा गोबर	100 क्विंटल	30.00	3000.00
खल्ली	15 किलोग्राम	25.00	375.00
यूरिया	50 किलोग्राम	6.00	300.00
एस0 एस0 पी0	13 किलोग्राम	20.00	260.00
म्यूरेट ऑफ पोटाश	50 किलोग्राम	25.00	1250.00
कीटनाशी	12 किलोग्राम	30.00	360.00
सिंचाई एवं अन्य खर्च			
सिंचाई	3 सिंचाई (60 घंटा)	50.00	3000.00
मचान बनाने का खर्च	5000 छड़ी एवं सूता	2.00	10000.00
चौकीदारी पर खर्च	6 माह	4500.00/माह	27000.00
फसल तुराई	औसतन 8 तुराई (48 मजदूर)	150.00	7200.00
ढुलाई पर खर्च	8 ढुलाई में	250.00/ ढुलाई	2000.00
उपकुल खर्च	–	–	**74045.00**
कार्यशील पूँजी पर ब्याज	–	5 प्रतिशत	3702.00
भूराजस्व	01 हे0	150.00	150.00
पारिवारिक श्रम	23	250.00	5750.00
कुल लागत	–	–	**83647.00**
प्रबंधन शुल्क	–	–	8365.00
कुल लागत	–	–	**92012.00**

सारणी 02: मैदानी क्षेत्रों में परवल की खेती प्रति हेक्टेयर अनुमानित आय का ब्योरा

औसत उत्पादन	105 क्विंटल
औसत मूल्य प्रति क्विंटल	1375.00 रूपये
प्रति हेक्टेयर आय	144375.00 रूपये
शुद्ध आय	**52363.00 रूपये**
लाभ लागत अनुपात	1 : 1.57

मैदानी क्षेत्रों में परवल की खेती

2. दियारा एवं ढ़ाब क्षेत्रों के लिये

सारणी 03: दियारा एवं ढ़ाब क्षेत्रों में परवल की खेती प्रति हेक्टेयर अनुमानित व्यय का ब्योरा

विवरण	उपयोग की जानेवाली सामाग्री	दर (रू0)	लागत खर्च (रू0)
गड्ढ़ा कोराई खर्च	20 मजदूर	250.00	5000.00
लत्ती खरीदकार ढुलाई का खर्च	1560 बोझा	5.00	7800.00
लत्ती लगाने का खर्च	20 मजदूर	250.00	5000.00
खाद/उर्वरक/दवा में खर्च			
सड़ा गोबर	100 क्विंटल	30.00	3000.00
खल्ली	15 किलोग्राम	25.00	375.00
यूरिया	50 किलोग्राम	6.00	300.00

एस0 एस0 पी0	13 किलोग्राम	20.00	260.00
म्यूरेट ऑफ पोटाश	50 किलोग्राम	25.00	1250.00
कीटनाशी	12 किलोग्राम	30.00	360.00
अन्य खर्च			
चौकीदारी पर खर्च	6 माह	4500.00 / माह	27000.00
फसल तुराई	औसतन 8 तुराई (48 मजदूर)	150.00	7200.00
ढुलाई पर खर्च	8 ढुलाई में	250.00 / ढुलाई	2000.00
उपकुल खर्च	–	–	**59545.00**
कार्यशील पूँजी पर ब्याज	–	5 प्रतिशत	2977.00
भूराजस्व	01 हे0	150.00	150.00
पारिवारिक श्रम	20	250.00	5000.00
कुल लागत	–	–	**67672.00**
प्रबंधन शुल्क	–	–	6767.00
कुल लागत	–	–	**74439.00**

सारणी 04: दियारा एवं ढ़ाब क्षेत्रों में परवल की खेती प्रति हेक्टेयर अनुमानित आय का ब्योरा

औसत उत्पादन	105 क्विंटल
औसत मूल्य प्रति क्विंटल	1375.00 रूपये
प्रति हेक्टेयर आय	144375.00 रूपये
शुद्ध आय	**69936.00 रूपये**
लाभ लागत अनुपात	1 : 1.94

दियारा एवं ढ़ाब क्षेत्रों में परवल की खेती

नोटः नदी किनारे के बलुई जमीन अन्य जगहो की तुलना में अधिक उर्वरा शक्ति युक्त एवं नमीयुक्त होने के कारण अधिक उपज एवं आय की प्राप्ति होती है।

निष्कर्ष

दियारा क्षेत्रों एवं अन्य मैदानी क्षेत्रों में परवल की खेती का आय–व्यय का ब्योरा दर्शाता है कि किसानो को प्रति हेक्टेयर परवल के उत्पादन से अच्छी आमदनी होती है। विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ है कि दियारा क्षेत्र में एक रूपये खर्च कर किसान दो रूपया पैंतिस पैसा शुद्ध लाभ अर्जित करते हैं जबकि अन्य मैदानी एक रूपये खर्च कर किसान एक रूपया एकहत्तर पैसा शुद्ध लाभ अर्जित करते हैं। अन्य सब्जियों की तरह परवल का बाजार मूल्य भी बहुत अस्थिर (परिवर्तनशील) होता है फिर भी किसानों को इस फसल से बेहतर आय प्राप्त होता है। इसी कारण से विगत पॉच वर्षों में लगभग 25 प्रतिशत परवल के क्षेत्रों में विस्तार हुआ है जो अन्य सब्जियों की तुलना में बहुत अधिक है। इसी तरह उत्पादन में भी लगभग 10 प्रतिशत बढ़ोत्तरी हुआ है।

संदर्भ

1. उद्यान निदेशालय, बिहार सरकार 2023–24
2. बिहार आर्थिक सर्वेक्षण 2025–26
3. किसानों की सूचना के आधार पर